भारत का पर्यावरण और जनजातीय इतिहास

संपादक: प्रो. डॉ. अजय प्रताप
प्रो. डॉ. बिंदा परांजपे
प्रो. डॉ. घन श्याम

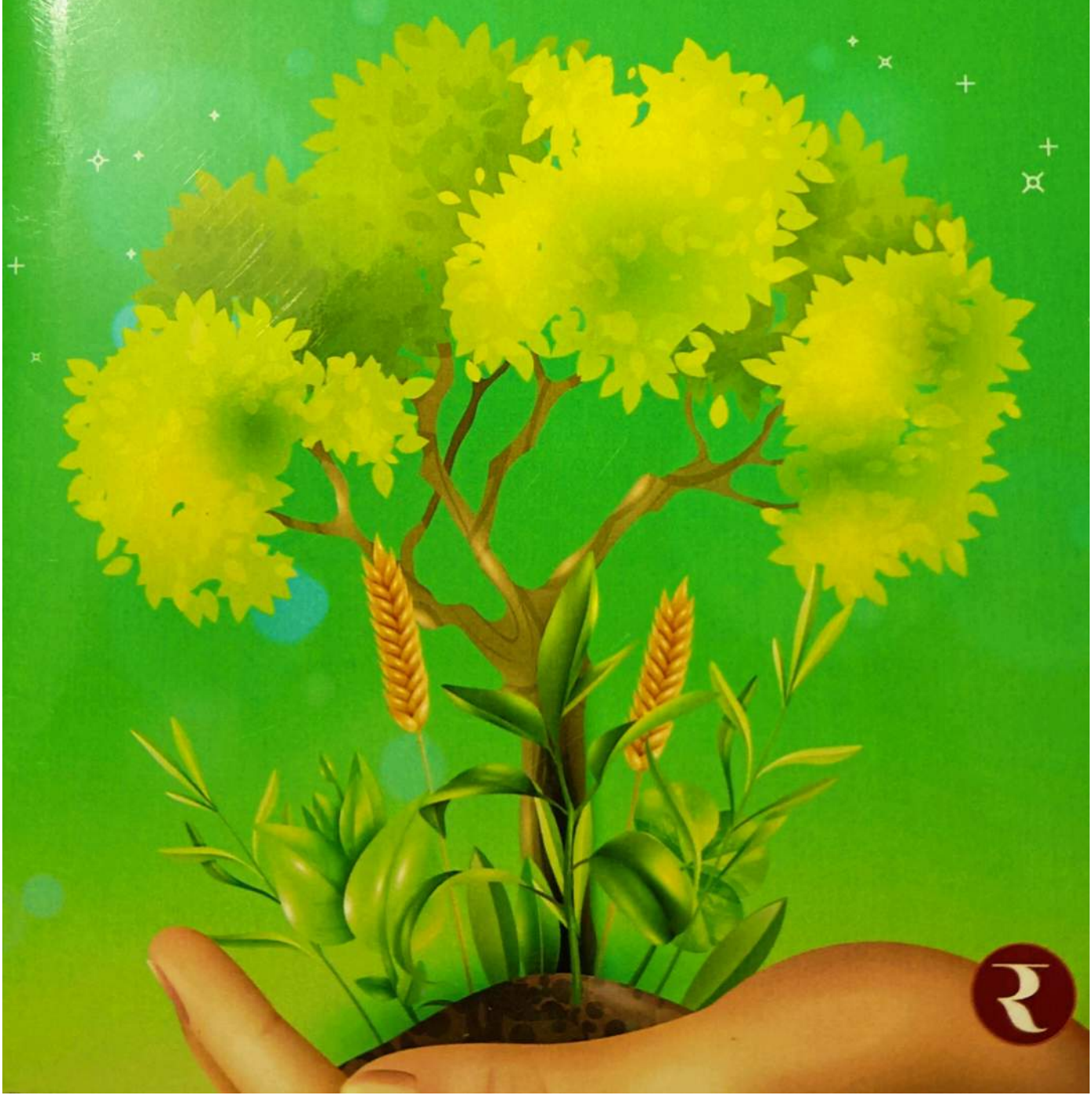

ISBN: 978-9394920385

Published by:

Rajmangal Publishers

Rajmangal Prakashan Building,
1st Street, Ozone, Quarsi, Ramghat Road
Aligarh-202001, (UP) INDIA
Cont. No. +91- 7017993445
www.rajmangalpublishers.com
rajmangalpublishers@gmail.com
sampadak@rajmangalpublishers.in

प्रथम संस्करण: जुलाई 2023 – पेपरबैक

प्रकाशक: राजमंगल प्रकाशन

राजमंगल प्रकाशन बिल्डिंग, 1st स्ट्रीट,

ओजोन, क्वार्सी, रामघाट रोड,

अलीगढ़, उप्र. – 202001, भारत

फ़ोन : +91 - 7017993445

First Published: July 2023 - Paperback
Printed by : Thomson Press India LTD, Repro India LTD & Manipal Tech LTD
eBook by: Rajmangal ePublishers (Digital Publishing Division)
Copyright *© प्रो. अजय प्रताप व अन्य लेखक*

यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि इसे प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में मुद्रित, प्रसारित-प्रचारित या विक्रय नहीं किया जा सकेगा। किसी भी परिस्थिति में इस पुस्तक के किसी भी भाग को पुनर्विक्रय के लिए फोटोकॉपी नहीं किया जा सकता है। इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त किए गए विचार के लिए इस पुस्तक के मुद्रक/प्रकाशक/वितरक किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं हैं। सभी विवाद मध्यस्थता के अधीन हैं, किसी भी तरह के कानूनी वाद-विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत ही होगा।

अंतर्वस्तु

1.	**विजेंद्र मीना** आदिवासी संस्कृति और प्रकृति के साथ सम्बन्ध	9
2.	**सुरेश कुमार** प्राचीन भारत में आदिवासी समाज एवं उनका व्यवसाय : असुर जनजाति के विशेष सन्दर्भ में	17
3.	**सुधा सोनकर** आदिवासी एवं पर्यावरणः औपनिवेशिक वन नीति : औपनिवेशिक मिर्जापुर के सन्दर्भ में	24
4.	**राम कुमार** मुण्डा विद्रोह एवं औपनिवेशिक सत्ता के प्रति आदिवासी प्रतिक्रिया	34
5.	**शशिकेश कुमार गोंड** गोंड जनजाति का एक संक्षिप्त अध्ययन : उत्पत्ति, इतिहास तथा संस्कृति के विशेष सन्दर्भ में	42
6.	**शिप्रा नन्दन** संपोषणीय विकास एवं जनजातिय महिलाएँ : थारू जनजाति के विशेष सन्दर्भ में	51
7.	**सुदामा सेट्ठी** 19वीं शताब्दी के पूर्वाध में आंग्ल–कंध संघर्ष : स्वतंत्र अस्तित्व एवं पर्यायवरणीय आयाम	68
8.	**प्रियंका गुप्ता एवं ऋषभ कुमार** जनजाति चिकित्सा का स्वरूप : संथाल जनजाति के विशेष संदर्भ में	78

गोंड जनजातिः उत्पत्ति, इतिहास तथा संस्कृति के विशेष सन्दर्भ में

शशिकेश कुमार गोंड

हमारे सौर मण्डल और पृथ्वी के प्राचीन इतिहास से जुड़ा हुआ, उतना ही पुराना मानवीय इतिहास भी रहा है। आरम्भ से जब से हम मानवीय इतिहास के विषय में जितना जान पाये हैं, उससे कहीं ज्यादा और जानने एवं समझने की जिज्ञासा मानव जीवन में बढ़ती चली गयी। इसका मुख्य कारण मानव में जिज्ञासु प्रवृत्ति का होना रहा है। मसलन प्राइमेट कपि से होमोसेपीयन्स तक के सफर में मानव हमेशा से कुछ–न–कुछ सीखता आया है और यही सीखना या यो कहें कि प्रकृति के साथ संसर्ग से प्राप्त होने वाले अनुभव ने मानव को इस ब्राह्मण के एक मात्र जीवित ग्रह का सबसे विकसित जीव बना दिया। पाषाण युग से प्रारम्भ होने वाली मानवीय यात्रा ने प्राचीन काल से ही सभ्यताओं के उत्थान एवं पतन का अनुभव, आक्रांताओं और महान शासकों के दौर को भी अपनी आने वाली पिढ़ियों के साथ साझा किया। जिसके परिणामस्वरूप प्राचीन, आधुनिक विज्ञान और प्रकृति के इस मेल ने आज पृथ्वी पर सबसे आधुनिक समाज को खड़ा करने में सफलता प्राप्त की है। आज मानव की पहुँच ब्राह्मण के उस छोर तक सम्भव हो पायी है, जो पिछले कई सदियों तक इन्सान की कल्पना मात्र थे।

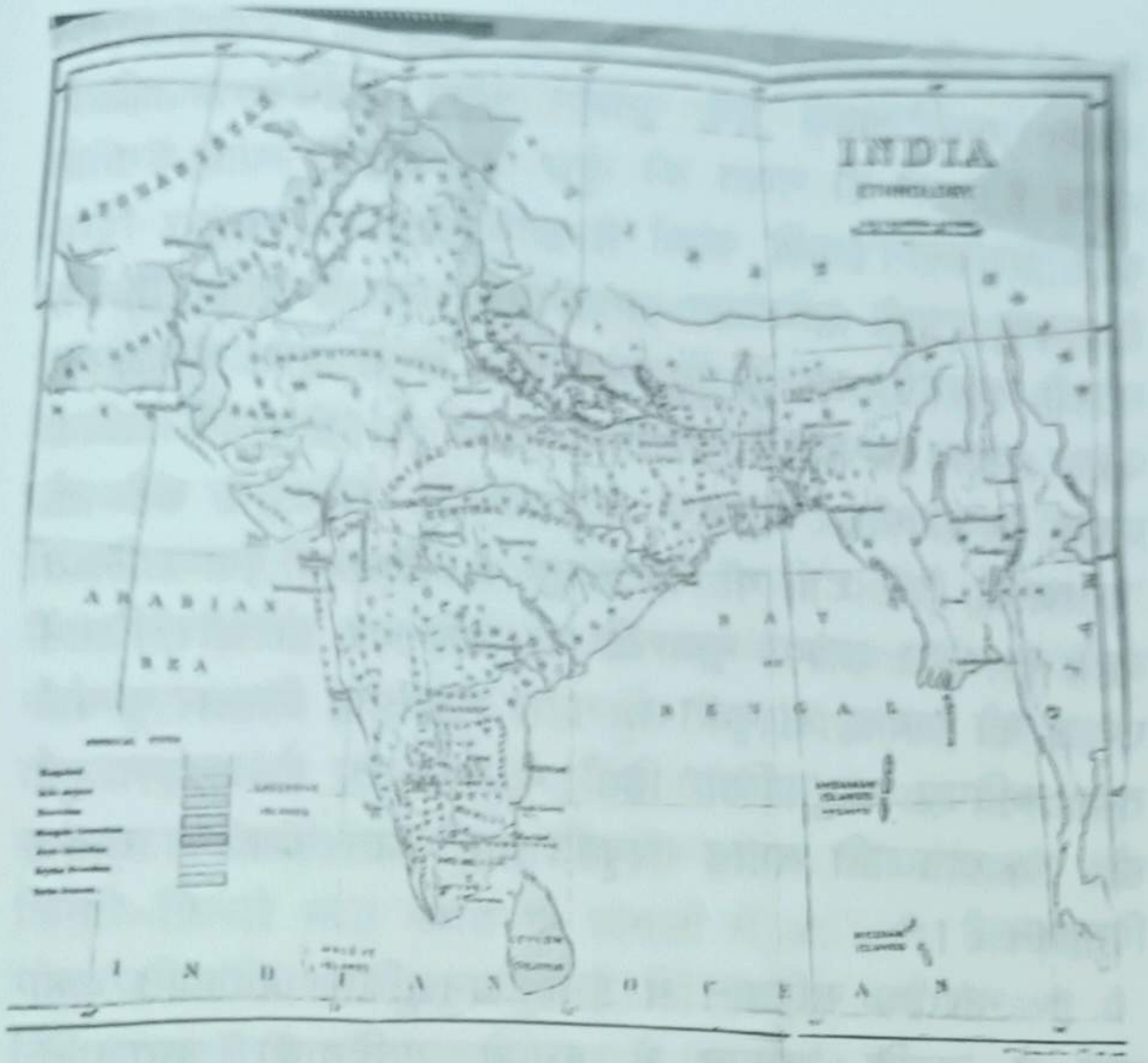

परन्तु वर्तमान के इस आधुनिक समाज के साथ अनेक आदिम जनसंख्या भी अपने उसी स्वरूप में समाज की मुख्य धारा से इतर अपना जीवन व्यतीत करती आयी है। जिनकी भाषा, संस्कृति एवं उक्त भू–भाग पर निवास करने की प्राचीनता को देखते हुए नृजातिशास्त्रीयों एवं मानव शास्त्रीयों ने इन्हें आदिम जनजातियाँ कह के परिभाषित किया है। इनके निवास, क्षेत्रों एवं संस्कृतियों के आधार पर जनतातियों को भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में कई समूहों एवं वर्गो में वर्गीकृत किया गया है। वर्तमान समय में ही भारत की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा आदिवासियों का हैं, आदिवासी शब्द का अर्थ मूलनिवासी होता है। वैसे तो भारत

में कई प्राचीन प्रजातियों का आगमन हुआ था। जिनमें निग्रों, प्रोटो– आस्ट्रेलायड एवं भूमध्यसागरीय, नार्डिक प्रजातियाँ प्रमुख है। भले ही भारत की कुछ जनजातियाँ स्थाई ढंग से कृषि, पशुपालन आदि कार्यो में रूचि लेना प्रारम्भ कर दिया है, परन्तु इनकी अधिकांश जनसंख्या आज भी शिकार करने, मछली कपड़ने, लकड़ी काटने आदि कार्यो द्वारा ही अपना जीवन यापन करती है। वर्तमान भारत में 50 से भी अधिक प्रमुख जनजातीय समुदाय है। संक्षिप्त शब्द में कहें तो ''जनजाति ऐसी टोलियों का समूह है, जिसका एक सन्निध्य वाले भू–खण्ड अथवा भूखण्डों पर अधिकार हो और जिनमें एकता की भावना, संस्कृति में गहन समानता, निरन्तर सम्पर्क तथा कतिपय सामुदायिक हितों में समानता से उत्पन्न हुई हो। एक जनजाति समान संस्कृति वाली जनसंख्या का स्वतंत्र विभाजन है।

भारतीय संविधान में इन्हें 'अनुसूचित जनजाति कहा गया है जबकि वर्तमान में इनको आदिवासी, वन्यजाति, अरव्यवासी, गिरीजन आदि अनेक नामों से जाना जाता है। भारतीय जनजातियों, का मूलस्रोत कभी देश के सम्पूर्ण–भू–भाग पर फैली प्रोटो आस्ट्रेलाडय तथा मंगोल जैसी प्रजातियों को माना जाता है। इनका एक अन्य स्रोत नीग्रिटों प्रजाति भी है जिनके निवासी अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में अभी भी विद्यमान है। भारत में उत्तरी–पूर्वी प्रदेश इसमें हिमालय की तराई क्षेत्र तथा उत्तर पूर्वी क्षेत्र सम्मिलित किये जाते है। औरै मध्य प्रदेश, दक्षिण राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश, द0 उ0प्र0, गुजरात, बिहार उड़ीसा में देश की लगभग 80 प्रतिशत जनजाति जनसंख्या निवास करती है। बाकी कि मध्यवर्ती क्षेत्र और दक्षिण क्षेत्र आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में निवास करती है। भारत की कुछ प्रमुख

जनजातियों में संथाल, कोल, भील, मुंडा, गांड, खोण्ड, खरवार, बैगा, गारो, खासी, उरॉव नागा, बुक्सा, थारू, मीणा आदि है।

गोंड जनजाति भारत की प्रमुख एवं प्राचीन जनजातियों में से एक है। गोंड जनजाति की कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में लगभग चार करोड़ के आस–पास है, इस लिहाज से यह भारत की सबसे बड़ी जनजाति समूह है। वर्तमान भारत में गोंड जनजाति का मुख्य निवास स्थान विन्ध्य पर्वत से लेकर सतपुड़ा पठार, छत्तीसगढ़ मैदार में दक्षिण तथा दक्षिण–पश्चिम–में गोदावरी नदी तक फैले हुए पहाड़ और वन है। कुछ मानवविज्ञानियों की माने तो आस्ट्रोलायड नस्ल तथा द्रविड़ परिवार की यह जनजाति सम्भवतः पाँचवी–छठी शताब्दी में दक्षिण से गोदावरी के किनारे–किनारे मध्य भारत के जंगलों में आ बसी। मोदियाल गोंड जनजाति का वह समूह है जो विशुद्ध रूप से वनों में निवास करती है और उसके उत्पाद पर निर्भर है।

मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में गोंड जनजाति की सघन जनसंख्या निवास करती है। बैतल, होशंगाबाद, छिन्दवाड़ा, बालाघाट, शहडोल, मण्डला, सागर और दामोह मध्य प्रदेश के वह जिले है, जो गोंड जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है। इसके साथ ही साथ सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला से सटे जंगलों एवं नर्मदा नदी के उद्‌गम से अमरकंटक तक और छत्तीसगढ़ में मुख्य रूप से बस्तर, कांकेर, दत्तेबाड़ा, रामपुर, धमतरी बिलासपुर, कारबा, सरगुजा, दुर्ग, कवर्धा आदि क्षेत्रों तक फैली है। इसके अतिरिक्त गोंड जनजाति उत्तर प्रदेश के देवरिया, सोनभ्रद, मिर्जापुर इत्यादि, बिहार, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, कर्नाटक, पं0 बंगाल, गुजरात आदि में निवास करती है।

गोंड शब्द तेलगू भाषा के कोण्ड का अपभ्रंश माना जाता है। जिसका तेलगू में अर्थ वन आच्छादित पर्वत है। मध्य प्रदेश से गोंडो के ऐतिहासिक एवं प्राचीन साक्ष्य प्राप्त होते है। जिसका एक बड़ा हिस्सा गोण्डवाना कहलाता था। गोंड समुदाय के मिथकों, कहावतों तथा प्राचीन पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर यह मत बनता है कि एक समय इनका बड़े भू–भाग पर साम्राज्य था। गोंडों की उत्पत्ति के सन्दर्भ में कुछ विद्वानों का मत है कि गोंड लोग दक्षिण से उत्तर की ओर आये थे, इसका मुख्य कारण वह गोंडी भाषा को मानते है चूँकि गोंडी भाषा द्रविड़ भाषा परिवार का एक हिस्सा है। जबकि दूसरे विद्वान अमरकंटक अथवा नर्मदा क्षेत्र को इनका उद्‌गम स्थल मानते है। हाँलाकि मध्य प्रदेश में निवास करने वाले गोंड, गोंडी के साथ–साथ छत्तीसगढ़ी भाषा का प्रयोग भी प्रमुखता से करते है।

शायद ही भारत में कोई ऐसा अन्य आदिवासी समूह नहीं है जिसने इतनी रोचक तथा महत्वपूर्ण कहानियाँ को भारत के विभिन्न भागों में पीछे छोड़ा हो। लेकिन भारत तथा विदेशों के कम ही समाजशास्त्रियों तथा अन्य लेखकों ने जिन्होंने गोंडी संस्कृति पर कार्य किया उसके जड़ों तक जाने का प्रयास किया है। स्काटलैण्ड के रेव स्टीफन हिस्लॉप, ने सर्व प्रथम गोंडी कहानियों पर लेखन किया जो एक ईसाई धर्म प्रचारक थे। इसके बाद सर रिचर्ड टेंपल, जेम्स फोरसिद आदि ने लेखन किया। जिसमें 19वीं सदी में जेम्स फोरसिद का लेख "द ले ऑफ लिंगों काफी लोकप्रिय हुआ। बीसवीं शताब्दी में वेरियर ऐलीन जो गोंडों के बीच रहे और उनके उपर किताब भी लिखी। हाल के वर्षो में डॉ0 मोतीरावण कंगाली द्वारा गोंड जनजाति पर एक पुस्तक लिखी गयी

जिसका शीर्षक है'' पारि कुपार लिंगों गोंडी पुनेम दर्शन'' जो हिन्दी माध्यम में वर्णित है।

बहरहाल गोंडी भाषा में पृथ्वी को सिगरदीप या गंगोदीप कहा जाता है, जिसका अर्थ पाँच खण्ड धरती या पंचमहाद्वीप है। असल में गंडो द्वीप का अर्थ होता है प्रकृति के पाँच भूतों या तत्वों का संगम, जिनसे सब कुछ रचित हुआ है, जिसका अर्थ पाँच महाद्वीप होता है। अतः गांडी बोदम सूर (गोंडी मूल स्रोत) इसे पाँच द्वीपों के मिलन स्थल को ही गंडोद्वीप कहती है। जिसके अनुसार गोंड, गंडो दाई के बच्चे है जो उस समुदाय में रहने आई जिनका देश गोंडवाना था एवं जिनकी भाषा गोंडीवाणी थी। चूँकि इन बच्चों का जन्म गंडों दाई की कोख से हुआ था, अतः उन्हें कोय कहकर पुकारा गया। क्योंकि कोय या कोक का अर्थ गोंडी भाषा में कोख होता है। जिस प्रकार से मनु के मानव समुदाय को आर्य या हिन्दू कहा गया उसी प्रकार कोय से जन्म लेकर कोय जाति अस्तित्व में आयी जो गोंड जाति के रूप में संगठित हुई जिनकें जीने का गढ़ गोंडी कहलाया। यह सभ्यता जो गांडी पुनेम के मूल्यों पर आधारित है तथा यही इसमें प्रमुख भी है, क्योंकि गोंडी पुनेम से पूर्व इस क्षेत्र को कोयमूरी धरती कहा जाता था जिसका अर्थ है कोय के बच्चों की धरती।

इसी मान्यता के अनुसार वर्षो पहले शंभु–गौरा के शासनकाल में एक गोंड राज्य के सरदार जिनका नाम पुलविश था, के यहाँ एक पुत्र का जन्म हुआ, जिनका नाम रूपोलांग पाहांदी पारि कूपार लिंगो था। जो आगे चलकर कोय जाति के नेता बने एवं इनकी भलाई के लिए गोंडी पुनेम या गोंडी आचार–संहिता (विधि–विधान) का निर्माण किया जो उनकी जीवन में शिक्षा देती थी। जिसका पालन

आज भी गोंड लोग करते है। जिसका मूल दर्शन ही दूसरों की भलाई करना या सेवा करना था। जिसे आज भी देखा जा सकता है। इसलिए गोंड समुदाय के लोगों द्वारा एक–दुसरें का अभिवादन "जय सेवा" कह के किया जाता है। इस प्रकार पारि कुपार लिंगों की शिक्षाएँ मौखिक रूप से गोंड संस्कृति की आधार बनी जो उनके जीवन, धार्मिक क्रिया–कलापों एवं कृत्यों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। गोंड लोगों के अनुसार, लिंगों के तैंतीस शिष्य गोंडीदीप के विभिन्न भागों में अपने गुरु पहांदी परि कूपार लिंगों की शिक्षाओं का प्रसार करने गए, वह कोयमयूरी क्षेत्र था जो उस समय चार भागों में बटा था।

अतः लिंगों देवे के ही बाद में गोंड बड़ा देव, दुल्लादेव, घनश्याम पेन, बड़ोपन और भीवास आदिर के रूप में पूजने लगे। कुछ विद्वान जिनमें मोतीरावण कंगाली आदि आते है वह लिंगों देव का सम्बन्ध सिन्धु–घाटी की सभ्यता के पशुपती शिव से करते है जिनकी बनावट लगभग पारिकूपार लिंगों से मिलती है और सिन्धु–घाटी की संस्कृति का काफी कुछ–हिस्सा जैसे भाषा के शब्द गोंडी शब्दों से मेल खाते है के आधार पर यह कहते है कि यह एक गोंड सभ्यता थी।

मध्य भारत में प्रचलित दंत्त कथाओं के अनुसार आकाश, जल, वनस्पति, आदि का सृजन बड़ादेव ने ही किया। उन्होंने यहाँ जीवों में प्राण फूके, उन्होंने पहले स्त्री–पुरुष गोण्ड–गोण्डिन का निर्माण किया। उनके घने बालों से पर्वत आच्छादित वनों का जन्म हुआ इसके पश्चात् समस्त प्राणि जगत का। विभिन्न अंचल में रहने वाले गोंड कई उपशाखाओं में अलग–अलग नाम से जाने जाते है फिर भी कुछ फर्क को छोड़कर और रहन–सहन के आधार पर यह एक ही संस्कृति के वाहक नजर आते है। जैसे–मण्डला

के गोंड खेती–बाड़ी से जुड़े होने के कारण राजगोण्ड कहलाते है। जबकि गोंड राजाओं तथा बड़ादेव की गाथा गाने वाले प्रधान गोंड, एक जगह से दूसरी जगह डेरा डाल कर नाचने गाने वाले भिम्मा आदि है।

गोंड आवासों में बीच–बीच में ऑगन, उनके चारो ओर गलियारे या पर्छी और उससे लगे उरई या कमरे होते है। रसोई घर में देवता का स्थान होता है जिसे मुढ़त कहते है। घर का मुख्य द्वार पूर्वाभिमुख होता है घर के पहले कमरे को पैठा या बगला कहते है जिसे मेहमानो के लिए प्रयोग में लाया जाता है। गोंड घरों की साज–सज्जा का काम स्त्रियाँ करती है, सुन्दर चित्रों रंगों एवं मिट्टी के लेपो से घर सजाया जाता है। जिन्हें नाह–डोरा कहते हैं। दीवारों के साथ ही साथ हुई मिट्टी, गेरु, नील, कालिख आदि से फर्स पर भी ढ़ीग लगाई जाती है, जिसे ढ़िगना कहते है। स्त्रियों द्वारा दीवारों और फर्स पर बनायी जाने वाली चित्र कला आज एक खास गोंड चित्रकला के रूप में स्थापित हो चुकी है। गोंड समुदाय इन सबके अलावे नृत्य का भी शौकिन है। करमा, सैलारीना, ददारिया, सुआ इनके प्रमुख गीत है, जिन्हें आम बोल–चाल की भाषा में स्वांग, मरम्मत या तमाशा कहते हैं। ऋतु–चक्र के त्यौहार बिदरी पूजा, हर दिली, नवारवानी, जवारा, मड़ई, छेरात्रा बकबंधी आदि प्रमुख नृत्य है। इन सब के बावजूद बढ़ती आधुनिकता वनों की कटाई और गोंड़ों की जमीने और जंगलों के छिनने के कारण आज गोंड आदिवासी समुदाय भी इस नये प्रकार के आधुनिक दौर का शिकार हुआ है। बढ़ती–गरीबी और बेरोजगारी तथा शिक्षा के आभाव एवं इसकी पूर्ती के लिए वर्तमान दौर में गोंड समुदाय का एक बड़ा हिस्सा शहरों की ओर पलायन करने पर मजबूर हुआ है। बहरहाल भारतीय समाज के निर्माण में गोंड संस्कृति का

बहुत बड़ा योगदान रहा है। गोड़ी संस्कृति भारत की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है एवं भारतीय बहुसांस्कृतिक समाज का एक अभिन्न अंग रही है। गोंडवाना भू–भाग में निवासरत गोंड जनजाति की अद्भुत चेतना उनकी समाजिक, मनोवृत्तियों, भावनाओं, आचरणों तथा भौतिक पदार्थो का आत्मासात करने की कला का परिचारक है, जिसका आधार विज्ञान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. पाल, अनुराधा. 2014. गोंड–उत्पत्ति, इतिहास तथा संस्कृति. नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया. नई दिल्ली.
2. कंगाली, मोतीरावण. 2002. पारी कुपार लिंगों गोंडी पुनेम दर्शन. मध्य प्रदेश.
3. हसनैन, नदीम. 1990. जनजातीय भारत. जवाहर पब्लिशर्स. नई दिल्ली.
4. एलविन. 2007. एक गोंड गाँव में जीवन. राजकमल प्रकाशन. नई दिल्ली.
5. एलविन, वेरियर. 2002. द बैगा. ज्ञान पब्लिशींग हाउस. दिल्ली.
6. एलविन, वेरियर. 2002. द ट्राइबल वर्ल्ड ऑफ वेरियर एलविन. आक्फोर्ड युनिर्वसिटी प्रेस. नई दिल्ली.
7. मेहता, बी0एच0. 2008. गोंड ऑफ सेन्ट्रल इण्डियन हाईलैण्डस. कान्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी. दिल्ली.
8. घुर्ये, जी0एस0. 1959. द सिडिसुल्ड ट्राईब्ल्स ऑफ इण्डिया. नई दिल्ली.
9. मीणा, हरिराम. 2013. आदिवासी दुनिया. नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया. नई दिल्ली.
10. बोस, निर्मल कुमार. 1976. भारतीय आदिवासी जीवन. नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया. नई दिल्ली.

रश्मि प्रकाशन

भारतीय प्रवासन

और उसका भोजपुरी प्रक्षेत्रीय मूल

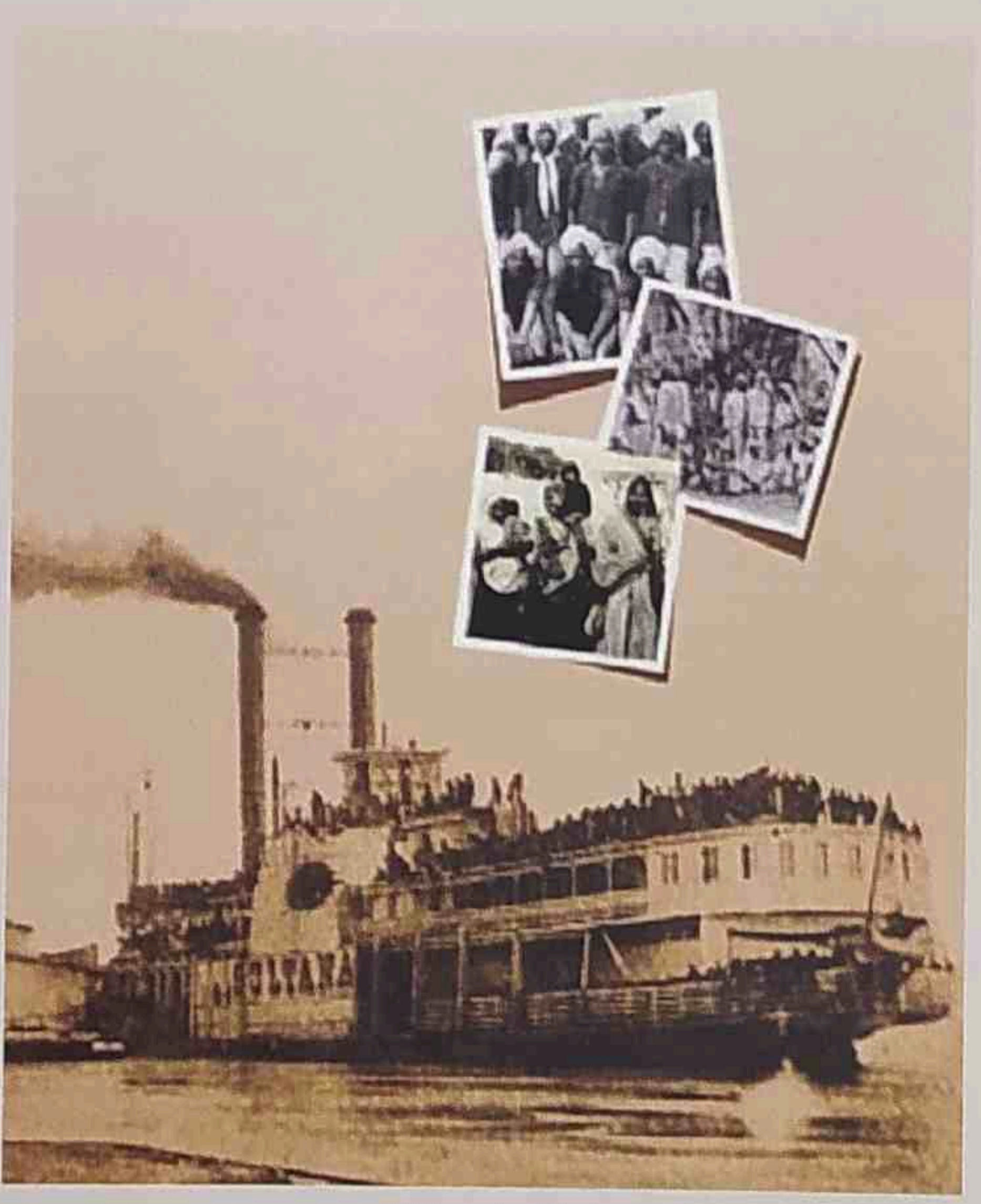

संपादक : डॉ. अजीत कुमार राय

तरतीब

मारीशस में गिरमिटिया श्रमिकों का प्रवासन ऐतिहासिक अध्ययन..... 11
आर्थिक संभावनाएँ, वैश्वीकरण के युग में
राजनीतिक भागीदारी और सांस्कृतिक सम्बन्ध..... 21
बिहार से प्रवासन :
कारक, चुनौतियाँ और अवसर (90 के दशक से वर्तमान तक)..... 25
भोजपुरी के अंतर्राष्ट्रीय आयाम..... 36
भोजपुरी भाषी जनसंख्या का प्रवासन..... 38
प्रवासी और भोजपुरी लोकगीत..... 42
खाड़ी देशों में भारतीय प्रवासन
और मानवाधिकारों के बीच संबंधों का एक अध्ययन (1973 ई.-2015 ई.)... 48
गिरमिटिया प्रथा की समाप्ति में
पंडित तोताराम सनाढ्य की भूमिका (फिजी के विशेष संदर्भ में)..... 53
भोजपुरी लोक संस्कृति एवं मारीशस में सांस्कृतिक बहुलतावाद..... 62
अप्रवासी भारतीय नारी : ऐतिहासिक दृष्टिकोण..... 70
औपनिवेशिक भारत में पलायन की परिस्थितियों की विवेचना
उत्तर प्रदेश और बिहार के विशेष संदर्भ में..... 75
प्रवासी भारतीयों की वैश्विक आर्थिक विकास में भूमिका एक अध्ययन..... 85
प्रवासी भारतीय : एक सर्वेक्षण 94

औपनिवेशिक भारत में पलायन की परिस्थितियों की विवेचना

उत्तर प्रदेश और बिहार के विशेष संदर्भ में

डॉ. शशिकेश कुमार गोंड

अब तो हमरा देश ही है बोलवै हम गोहराय के।
हम का कोई परदेसी बोला तो मरबै ढेला बहाई के।।

21 मार्च 1984, सूरीनाम दर्पण-पत्रिका, पारामारिबो सूरीनाम

पलायन मानवीय सभ्यता के इतिहास से आरंभ काल से ही जुड़ा हुआ है। मनुष्य बेहतर जीवन की तलाश और प्राकृतिक आपदाओं के कारण अपने निवास स्थान को बदलता रहा है। इसलिए मानवीय इतिहास वास्तव में एक स्थान पर जाकर बसने और उजड़ने का इतिहास है। इसका उदाहरण हमें विश्व इतिहास के साथ-साथ भारतीय इतिहास में भी स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। भारत जैसे संसाधन संपन्न भौगोलिक क्षेत्र का इतिहास आर्यों, यूनानियों, पार्थियनों, शकों, हूण, कुषाण और इस्लाम के भारत आने और भारतीय समाज का मुख्य हिस्सा बन जाने से जुड़ा हुआ है, जिनकी पहचान भारत के बहुसांस्कृतिक समाज में साफ तौर पर दिखाई पड़ती है और भारतीय समाज का इतिहास विविध संस्कृतियों के एक संगम स्थल के रूप में विकसित हुआ है।

भारत जैसे विशाल भौगोलिक क्षेत्र में अलग-अलग शारीरिक बनावट वाले लोगों का एक साथ जुड़कर रहते हुए एक साझी सांस्कृतिक पहचान वाले राष्ट्र का निर्माण करना यह स्पष्ट तौर पर प्रदर्शित करता है। एक ऐसा राष्ट्र, जहाँ विभिन्न सांस्कृतिक पहचान धर्म भाषा बोलियां और परम्पराएं साफ तौर से दिखाई पड़ती हैं, जिनका निर्माण चलायमान भारतीय संस्कृति में वाह्य आगमन और पलायन करने वाले समूहों के प्रभाव

The Indian Renaissance and Swami Vivekananda

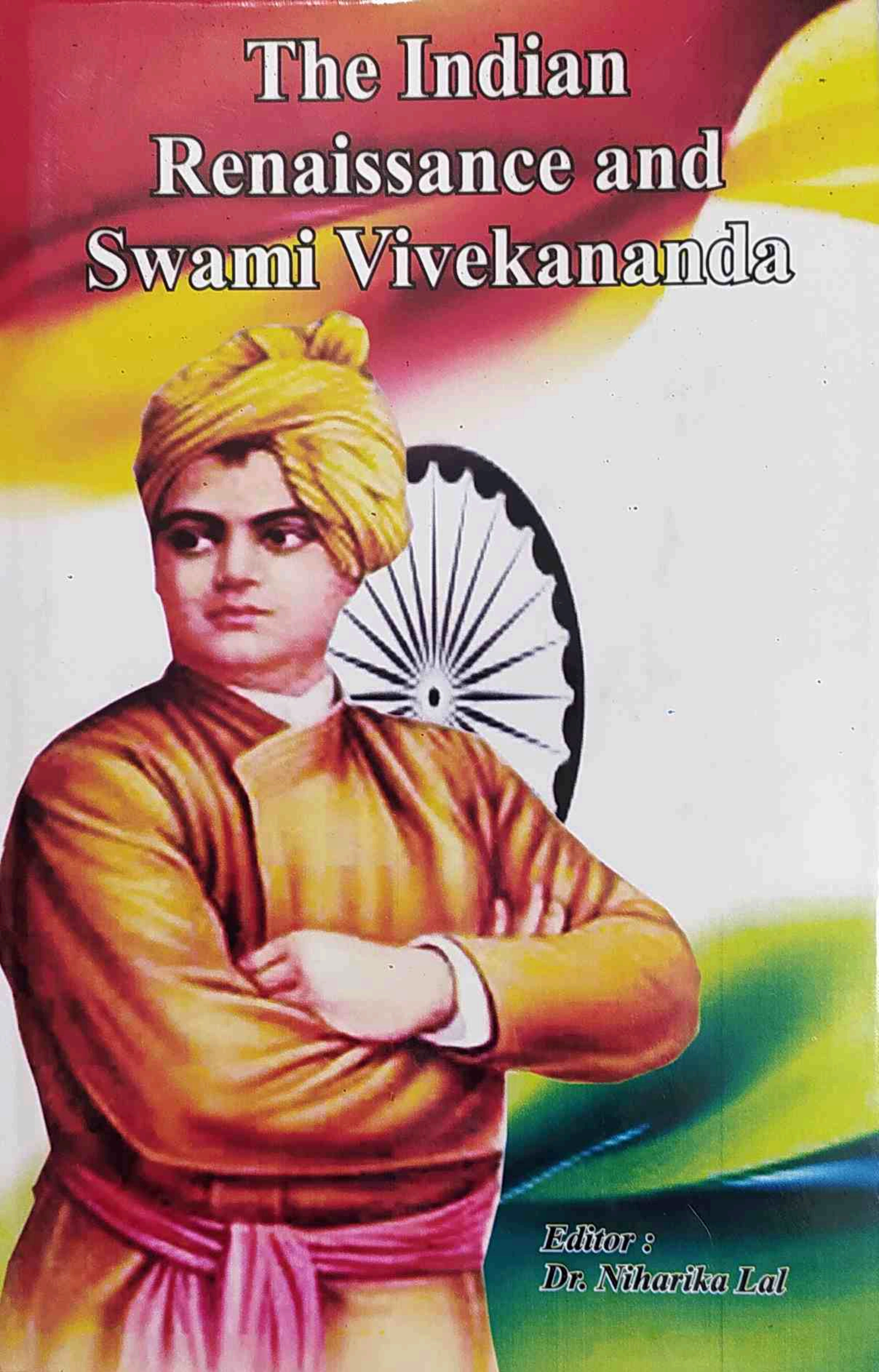

Editor :
Dr. Niharika Lal

23 स्वामी विवेकानन्द का समाजवादी चिंतन एवं नव्य वेदान्त समाजवाद 187-190
डॉ. कल्पना आनन्द

24 युगद्रष्टा स्वामी विवेकानन्द 191-198
डॉ. दीप्ति सिंह

25 स्वामी विवेकानन्द : एक अज्ञात कवि 199-203
डॉ. सपना भूषण

26 स्वामी विवेकानन्द जी की धार्मिक दृष्टि 204-209
डॉ0 ममता मिश्रा

27 समकालीन समय में राष्ट्रवादी विमर्श एवं विवेकानन्द के विचार 210-213
डॉ0 शशिकेश कुमार गोंड

28 स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में मानव-एकता का आदर्श 214-224
अश्विनी कुमार

29 स्वामी विवेकानन्द के विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता 225-235
त्रिभुवन मिश्र, अमित कुमार

30 स्वामी विवेकानन्द जी के दर्शन की धर्म विषयक अवधारणा 236-246
डॉ0 विभा रानी

31 भारत का नवनिर्माण : स्वामी विवेकानंद की दृष्टि 247-254
डॉ0 आशा यादव

32 स्वामी विवेकानंद की शिक्षा और अनहद नाद 255-262
डॉ0 मीनू पाठक

33 ऊर्जा स्रोत विवेकानन्द 263-269
डॉ0 पूनम पाण्डेय

34 स्वामी विवेकानन्द के आध्यात्मिक अनुगूँज में सांगीतिक स्वर 270-276
डॉ0 सीमा वर्मा

★

समकालीन समय में राष्ट्रवादी विमर्श एवं विवेकानन्द के विचार

✦ डॉ0 शशिकेश कुमार गोंड

वर्तमान समय में राष्ट्रवाद की कोई निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती है क्योंकि भिन्न–भिन्न काल खण्डों में इसकी अलग–अलग किस्में रही हैं। राष्ट्रवाद की आधुनिक अवधारणा का जन्म मुख्य रूप से यूरापीय देशों में 19वीं और 20वीं शताब्दी में अपने को संगठित करने के प्रयासो में परिलक्षित होती है, जिसमे फ्रांस अग्रणी रहा, उसके राष्ट्रवाद में वैचारिक और भौगोलिक तत्वों की प्रधानता स्पष्ट होती है। इसका अनुसरण बाद के वर्षों में इटली और जर्मनी ने अपने को एक भौगोलिक राष्ट्रीय ईकाई में एकीकृत करने के लिए किया। लेकिन 20वीं शताब्दी में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के जन्म और विकास एवं प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के परिणास्वरूप एशिया, अफ्रीका के देशों में उपनिवेशी राष्ट्रवाद का जन्म हुआ जहां विदेशी शक्तियों के विरुद्ध एकजुट होकर उनको देश से बाहर करने के लिए जो आन्दोलन चलाये गये उन आन्दोलनों ने राष्ट्र की और राष्ट्रवाद की परिभाषा में एक नया अध्याय जोड़ा, जिसकी उत्पत्ति पश्चिम और पूर्व की संस्कृतियों के मिलने के परिणामस्वरूप हुई। जहां एक ओर हमें वैचारिक द्वन्द्व दिखाई पड़ता है वहीं सांस्कृतिक एवं साहित्यिक श्रेष्ठता को स्थापित करने का होड़ भी चलता है। इस तरह का राष्ट्रवाद जिसका जन्म विदेशी शक्तियों के गुलामी से मुक्ति पाने की जद्दोजहद के बीच हुआ, उसने उन गुलाम देशों को अपनी खोई हुई प्राचीन अस्मिता को पुनर्स्थापित करने तथा समृद्ध साहित्यों को दोबारा खंगालने का अवसर प्रदान किया। अगर दूसरे शब्दों में कहा जाय तो अपनी खोई प्रतिष्ठा को पुनःप्राप्त करने, स्वयं को जागृत करने, सामाजिक बुराईयों को दूर करने का कार्य प्रारम्भ हुआ। अर्थात् पुनर्जागरण का सूत्रपात, जैसा कि यूरोप में 1453 में घटित हुआ था। अतः 19वीं शताब्दी के मध्य और 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में भारत में एक के बाद एक समाज सुधार और बौद्धिक

✦ असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय, वाराणसी।

VARIOUS DIMENSION OF WOMEN EMPOWERMENT

महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम

Dr. Shephalika Rai
Dr. Anjali Agrawal
Dr. Prabhat Kumar Singh

The responsibility for facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagiarism, if any, in this book is entirely that of the author(s). Neither the publisher nor the editors will be responsible for them whatever.

ISBN : 978-93-94424-77-7

Copyright : Editors

Edition : 2022

Published by

ABS Books
Publisher and Exporter
B-21, Ved and Shiv Colony, Budh Vihar
Phase-2, Delhi - 110086
✆ : + 919999868875, +919999862475
✉ : absbooksindia@gmail.com
Website : www.absbooksindia.com

PRINTED AT
Trident Enterprises, Noida (UP)

Overseas Branches

ABS Books
Publisher and Exporter
Yucai Garden, Yuhua Yuxiu
Community, Chenggong District,
Kunming City, Yunnan Province
-650500
China

ABS Books
Publisher and Exporter
Microregion Alamedin-1
59-10 Bishek, Kyrgyz
Republic- 720083
kyrgyzstan

All right reserved. No. Part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, transmitted or utilized in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the copyright owner translator. Application for such permission should be addressed to the Publisher and translator. Please do not participate in or do not encourage piracy of copyrighted materials in violation of the author's rights. Purchase only authorized editions.

Various Dimension of Women Empowerment

By : Dr. Shephalika Rai, Dr. Anjali Agrawal
Dr. Prabhat Kumar Singh

22.

लैंगिक समानता की खोज में : आधुनिक भारत में महिला मुक्ति पहल का एक अध्ययन

डॉ. शशिकेश कुमार गोंड*

समाज एक ऐसी इकाई है जिसका आधा हिस्सा महिलाओं से मिलकर बना हुआ है। लेकिन वास्तव में मानवीय सभ्यता के विकास के साथ-साथ सामाजिक निर्माण और व्यवस्था में महिलाओं की सामाजिक बराबरी जाती रही। इस तरह से महिलाओं के प्राथमिक और मौलिक अधिकार धीरे-धीरे कमजोर होते चले गए एवं समाज पितृसत्ता की ओर बढ़ता चला गया। विश्व के अनेक सभ्यताओं और भागों में भी समाज की आधी आबादी (स्त्री) से संबंधित अनेक कुरीतियां और रीति-रिवाज प्रचलित एवं स्थापित होते गए। जिनको आधार बनाकर महिलाओं को समाज की मुख्यधारा से पीछे धकेला जाता रहा और जिसके कारण वह समाज का मुख्य अंग होते हुए भी पुरुष प्रधान समाज के अधीन होती चली गई। जैसा कि नारीवादी विचारक सिमोन दीबुआ ने अपनी पुस्तक द सेकंड सेक्स में परिस्थिति का वर्णन करते

*असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी।

भारत का पर्यावरण और जनजातीय इतिहास

संपादक: प्रो. डॉ. अजय प्रताप
प्रो. डॉ. बिंदा परांजपे
प्रो. डॉ. घन श्याम

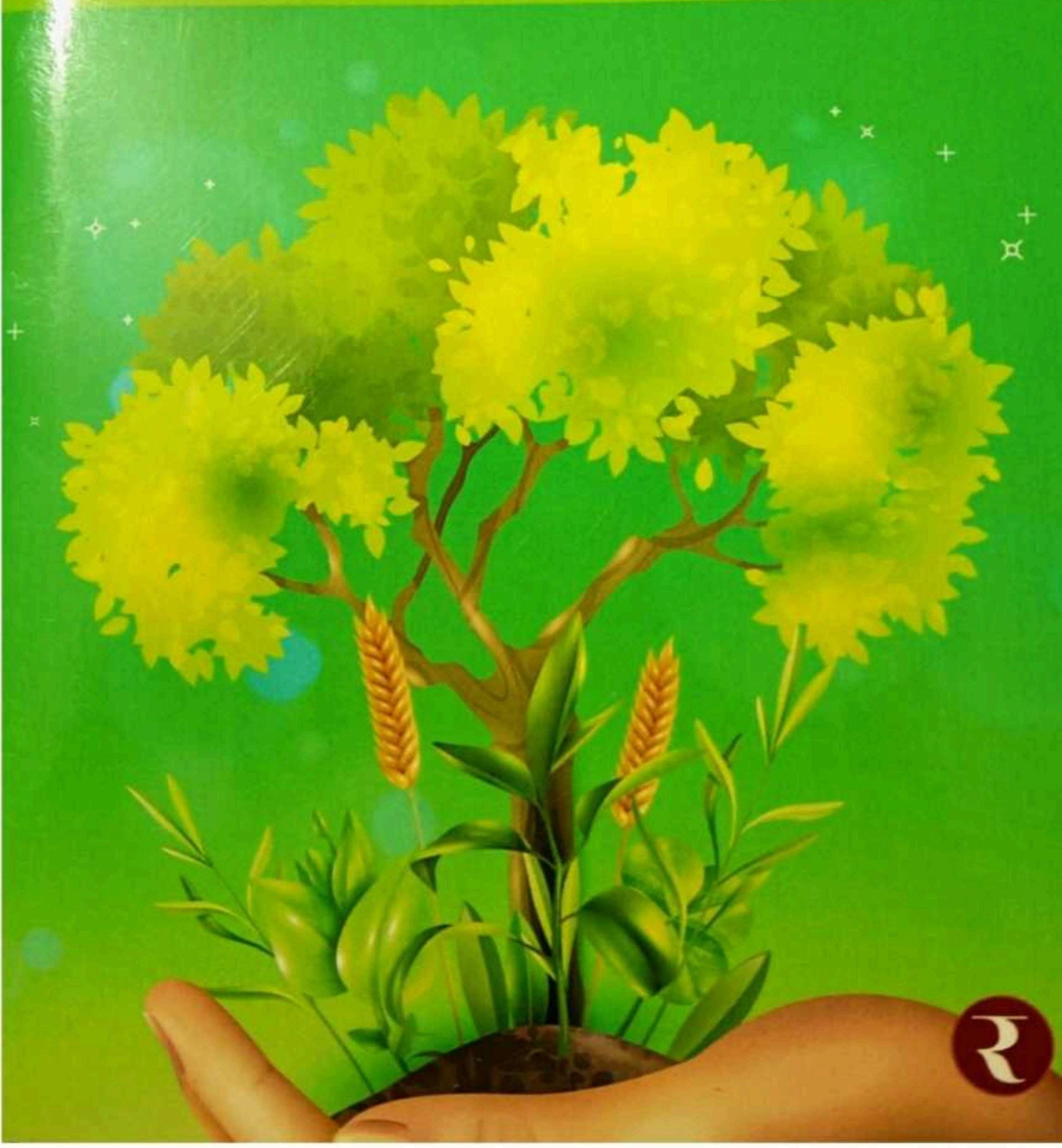

अंतर्वस्तु

1.	**विजेंद्र मीना** आदिवासी संस्कृति और प्रकृति के साथ सम्बन्ध	9
2.	**सुरेश कुमार** प्राचीन भारत में आदिवासी समाज एवं उनका व्यवसाय : असुर जनजाति के विशेष सन्दर्भ में	17
3.	**सुधा सोनकर** आदिवासी एवं पर्यावरणः औपनिवेशिक वन नीति : औपनिवेशिक मिर्जापुर के सन्दर्भ में	24
4.	**राम कुमार** मुण्डा विद्रोह एवं औपनिवेशिक सत्ता के प्रति आदिवासी प्रतिक्रिया	34
5.	**शशिकेश कुमार गोंड** गोंड जनजाति का एक संक्षिप्त अध्ययन : उत्पत्ति, इतिहास तथा संस्कृति के विशेष सन्दर्भ में	42
6.	**शिप्रा नन्दन** संपोषणीय विकास एवं जनजातिय महिलाएँ : थारू जनजाति के विशेष सन्दर्भ में	51
7.	**सुदामा सेट्ठी** 19वीं शताब्दी के पूर्वाध में आंग्ल–कंध संघर्ष : स्वतंत्र अस्तित्व एवं पर्यायवरणीय आयाम	68
8.	**प्रियंका गुप्ता एवं ऋषभ कुमार** जनजाति चिकित्सा का स्वरूप : संथाल जनजाति के विशेष संदर्भ में	78

गोंड जनजातिः उत्पत्ति, इतिहास तथा संस्कृति के विशेष सन्दर्भ में

शशिकेश कुमार गोंड

हमारे सौर मण्डल और पृथ्वी के प्राचीन इतिहास से जुड़ा हुआ, उतना ही पुराना मानवीय इतिहास भी रहा है। आरम्भ से जब से हम मानवीय इतिहास के विषय में जितना जान पाये हैं, उससे कहीं ज्यादा और जानने एवं समझने की जिज्ञासा मानव जीवन में बढ़ती चली गयी। इसका मुख्य कारण मानव में जिज्ञासु प्रवृत्ति का होना रहा है। मसलन प्राइमेट कपि से होमोसेपीयन्स तक के सफर में मानव हमेशा से कुछ–न–कुछ सीखता आया है और यही सीखना या यो कहें कि प्रकृति के साथ संसर्ग से प्राप्त होने वाले अनुभव ने मानव को इस ब्राह्मण के एक मात्र जीवित ग्रह का सबसे विकसित जीव बना दिया। पाषाण युग से प्रारम्भ होने वाली मानवीय यात्रा ने प्राचीन काल से ही सभ्यताओं के उत्थान एवं पतन का अनुभव, आक्रांताओं और महान शासकों के दौर को भी अपनी आने वाली पिढ़ियों के साथ साझा किया। जिसके परिणामस्वरूप प्राचीन, आधुनिक विज्ञान और प्रकृति के इस मेल ने आज पृथ्वी पर सबसे आधुनिक समाज को खड़ा करने में सफलता प्राप्त की है। आज मानव की पहुँच ब्राह्मण के उस छोर तक सम्भव हो पायी है, जो पिछले कई सदियों तक इन्सान की कल्पना मात्र थे।

भूमि : अधिकार और अधिग्रहण के प्रश्न

इंदु उपाध्याय
नैरंजना श्रीवास्तव
आरती कुमारी

विषयानुक्रमणिका

समर्पण	....	iii
संदेश	....	v
आभार	....	vii
प्राक्कथन	....	ix

खंड-1

इतिहास के दर्पण में भूस्वामित्व और अधिग्रहण

1. गुप्तकालीन भूमिदान व्यवस्था : एक अध्ययन 19-27
   कु0 रेखा
2. गहड़वाल राजवंश में भू- अनुदान : एक 28-41
   अभिलेखीय अध्ययन
   डॉ0 आरती कुमारी
3. आर्थिक विकास एवं भूमि अधिग्रहण अधिनियम 42-48
   डॉ0 अरबिन्द कुमार
4. ब्रिटिश भारत में भूमि अधिग्रहण : भारतीय रेलवे 49-62
   के विशेष संदर्भ में
   डॉ0 शशिकेश
5. विकास एवं भूमि अधिग्रहण : भारत के सन्दर्भ में 63-70
   डॉ0 पूनम पाण्डेय
6. महिला सशक्तीकरण में भूमि अधिग्रहण अधिनियम 71-74
   की भूमिका
   डॉ0 प्रतिभा सिंह

4

ब्रिटिश भारत में भूमि अधिग्रहण : भारतीय रेलवे के विशेष संदर्भ में

*डॉ0 शशिकेश

भारतीय इतिहास में ब्रिटिश काल का प्रारम्भ मुख्यतः 1757 के पलासी के युद्ध में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी की जीत और बंगाल पर उसके आधिपत्य से होता है। हाँलाकि भारत में यूरोपीय कम्पनियों का आगमन जहाँगीर के काल से भी पहले हो चुका था परन्तु औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् जबकि मुगल साम्राज्य अपने पतन की ओर अग्रसर था एवं क्षेत्रीय शक्तियाँ अपना प्रभुत्व भारत के विभिन्न हिस्सों में स्थापित कर चुकी थीं। तब 18 वीं सदी के मध्य में पुर्तगालियों, डचों, फ्रांसिसियों और अंग्रेजों ने भारत की कमजोर राजनीतिक परिस्थितियों का फायदा उठाकर यहाँ अपना साम्राज्य या उपनिवेश स्थापित करने की पुरजोर कोशिश की, लेकिन इस कार्य में सफलता अंततः अंग्रेजी कम्पनी को प्राप्त हुई। इस प्रकार से आधुनिक भारतीय इतिहास का काल या अंग्रेजी शासन 1757 ई0 से प्रारम्भ होकर भारतीय स्वंतत्रता 1947 ई0 तक माना जाता है।

इस दौरान लगभग 200 सालों के ब्रिटिश शासन ने भारत में अनेक प्रकार के आमूल–चूल परिवर्तन किये और भारतीय संसाधनों के दोहन एवं भारतीयों के शोषण को अनवरत रूप से जारी रखा। अतः अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अंग्रेजी सरकार ने विभिन्न प्रकार की नीतियों और परियोजनाओं का नियमन अपने लाभ के लिए ब्रिटिश भारत में प्रारम्भ किया। जिनमें से रेलवे का निर्माण और विस्तार भी एक प्रमुख परियोजना थी।

चूँकि भारत में शासन कर रही ब्रिटिश ईस्ट इंण्डिया कम्पनी मुख्यतः एक व्यापारिक उपक्रम था जिसने 19 वीं सदी के मध्य तक पूर्णरूप से भारत पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था। परन्तु उसके प्रशासकों ने यह महसूस किया कि अगर ब्रिटिश माल को भारत में बड़े पैमाने पर खपाना है और

* असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, वसंत कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी.